Rs. 5/-

nbt.india
एक: सूते सकलम्

Readers' Club Bulletin
पाठक मंच बुलेटिन

Vol. 18, No. 10, October 2013

Readers' Club Bulletin
पाठक मंच बुलेटिन

Vol. 18, No. 10, October 2013 **वर्ष 18, अंक 10, अक्टूबर 2013**

Editor / संपादक
Manas Ranjan Mahapatra
मानस रंजन महापात्र

Assistant Editors / सहायक संपादकगण
Deepak Kumar Gupta
दीपक कुमार गुप्ता
Surekha Sachdeva
सुरेखा सचदेव

Production Officer / उत्पादन अधिकारी
Narender Kumar
नरेन्द्र कुमार

Illustrator / चित्रकार
Arya Praharaj
आर्य प्रहराज

Printed and published by Mr. Satish Kumar, Joint Director (Production), National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase-II, Vasant Kunj, New Delhi-110070

Printed at Pushpak Press Pvt, Ltd. 203-204, DSIDC Shed, Ph-I Okhla Ind. Area, New Delhi.

Typeset at Nath Graphics, 1/21, Sarvapriya Vihar, New Delhi-110016

Contents/ lwph

Interactive Storytelling Session		1
सात समुंदर	डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधरी	2
The Mahatma and...	Sabyasachi Bhattacharya	4
मुझे तो चालीस करोड़...	शोभा माथुर ब्रिजेंद्र	7
Diwali	Indira Noopur	9
डाक टिकट	ओमप्रकाश बजाज	13
चाट	अंजली	14
Princess Belmanti	Radha Kant Bharti	16
खेल गीत	माधुरी शास्त्री	18
Anecdotal Euphoria	Cadet Lalit Kumar	19
राजकुमार और परी	वेद प्रकाश कंवर	22
छक्कम छक्कम छक्कम रेल	प्रत्यूष गुलेरी	24
Birds, Animals and...	Mohan Lal Mago	25
तिक्के	शिवचरण चौहान	26
जापान : एक महान देश	इन्दिरा बागची	27
Highs and Lows	Cadet Vivek Boora	29
वीरबहूटी या थ्री-व्हीलर कार	आइवर यूशिएल	32

Editorial Address / lEikndh; irk

National Centre for Children's Literature, National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase - II, Vasant Kunj, New Delhi-110070

राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेस-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

E-Mail (ई-मेल) : office.nbt@nic.in

Per Copy/ एक प्रति Rs. 5.00 Annual subscription / वार्षिक ग्राहकी : **Rs. 50.00**

Please send your subscription in favour of **National Book Trust, India.**

कृपया भुगतान **नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के** नाम भेजें।

This Bulletin is meant for free distribution to Readers' Clubs associated with National Centre for Children's Literature.

यह बुलेटिन राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र से जुड़े पाठक मंचो को नि:शुल्क वितरित किया जाता है।

Interactive Storytelling Session for School Children

As a part of its efforts to connect children to books and reading, NCCL organised an interactive storytelling session for school children with **Prof. Anvita Abbi**, author and **Shri Atanu Roy**, illustrator of the NBT book *Jiro Mithe* in Nehru Bhawan, Vasant Kunj, New Delhi on 20 September 2013. The session, divided into two parts was held in NBT's book shop and NCCL Library respectively.

Prof. Anvita Abbi enlightened the children about the title *Jiro Mithe.* She said that, this the first folktale from Andaman and Nicobar Islands that has ever been published for children in a book form. She added that it was narrated to her by a tribal man of Andaman a few years back. This folktale brings into light the belief why the people of Andaman do not kill birds and consider birds as their ancestors. She also informed children about birds that exist only in Andaman. Later, she retold the story of *Jiro Mithe* which rejoiced the children.

Shri Atanu Roy revealed to the children the basic elements required to make illustrations attractive and appealing to the readers. He also told children that the illustrations should synchronize with the story and a lot of research needs to be done before preparing illustrations of a story.

During the second session, the children visited NCCL Library and glanced through the books available there on various subjects related to children's literature in different Indian and foreign languages. Prof. Abbi and Shri Roy resumed the storytelling and interacted with the children. They talked about various aspects of creativity and gave children guidelines to develop creativity. The children showed keen interest in the session and asked several questions related to the folktale and illustrations used in the book.

Around 90 students accompanied with their teachers from different schools of Delhi and NCR including Ajanta Public School, Gurgaon, Bhatnagar International School, Vasant Kunj and Sri Sathya Sai Vidya Vihar, Vasant Kunj particpated in the session. Ms Farida M. Naik, Joint Director, NBT and Shri Shashi Shetye, renowned illustrator also attended the session.

धारावाहिक उपन्यास
भाग : 8

सात समुंदर

पहला कदम

डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधरी

आपको हम यह याद दिलाना चाहते हैं कि पिछले भाग में आपने पढ़ा था आर्थर का बैडमिंटन खेलने तथा घायल होकर रात भर कराहते रहने के बारे में। इस भाग में कुछ और नई बातें...

चारों ओर भीड़। तरह-तरह की आवाजें। ओणम के अवसर पर पंपा के किनारे समूचा हरिपदम गाँव मानो इकट्ठा हो गया है। किसी का साथी बिछड़ गया है। वह उसे पुकार रहा है। कोई बच्चा अपने माँ-बाप से अलग होकर रो रहा है। दूसरी कोई औरत उसे मना रही है। गाँव में करीब सभी एक-दूसरे को जानते हैं। वह आवाज दे रही है "अरे कारतम्मा, देख तेरे बेटे ने रो-रोकर क्या हाल बना लिया है!"

ऐसे में, देखते-ही-देखते भीड़ में से रास्ता बनाते हुए नारायणन गायत्री को लेकर पंपा के किनारे पहुँच गए। फिर उसका फ्राक उतारकर गंजी के ऊपर से उसकी कमर के चारों ओर उन्होंने अपना गमछा बाँध दिया।

"द्ददा!" गायत्री कुछ कहना चाहती थी, परंतु उसका गला सूख रहा था।

"अरे चल!" कहते हुए नारायणन ने उसे गोदी में उठाकर पानी में लाकर खड़ा कर दिया।

कतार में बीस-बाईस छोटी-छोटी लड़कियाँ खड़ी थीं। थोड़ी दूर पानी में दो नावों के बीच एक बाँस तैर रहा था। वही था प्रतियोगिता का अंतिम छोर। प्रतियोगियों को उसे छूकर वापस किनारे आना था।

गायत्री को लगा, उसके पैर काँप रहे हैं।

इतने में व्हिसिल बजी। चारों ओर के शोरगुल के बीच एक नई उल्लास ध्वनि।

सभी लड़कियों ने एक साथ छलाँग लगाई। 'छप्प' की आवाज हुई। फिर लगीं सभी हाथ-पाँव चलाने।

सभी के घर वाले उनका हौसला बढ़ा रहे थे। "पंचमी, चल-चल, आगे बढ़!"

किसी ने किसी कोच से तो तैराकी का प्रशिक्षण लिया नहीं था। जोश और हिम्मत ही उनकी पूँजी थी। पानी से सिर ऊँचा करके सब हाथ-पैर मार रही थीं।

गायत्री भी पागलों की तरह हाथ-पैर चला रही थी। शायद एकाध बार अप्पुपन की आवाज उसके कानों तक गई होगी, "शाबाश बेटी!"

हर्ष और उत्साह से सभी लोग कुछ-न-कुछ कह रहे थे।

मंद-मंद पानी के हिलोरे में वह बाँस हिल रहा था। कभी ऊपर, कभी नीचे लहरें उसे नचा रही थीं। जैसे कबूतरों का झुंड दाना चुगने के लिए पंख फड़फड़ाकर एक साथ तेज उड़ जाता है, उसी तरह वे नन्ही-नन्ही लड़कियाँ इस बाँस को छूकर तुरंत किनारे की ओर भागीं। पलक झपकते ही गायत्री भी उस बाँस को

छूकर वापस आने लगी।

हर्ष से प्रफुल्लित और उत्साह से भरपूर दद्दा का चेहरा सामने था। वे हाथ हिला रहे थे। अगले ही क्षण गायत्री नारायणन की बाँहों में थी।

बासठ साल के नारायणन पोती को कंधे पर बैठाकर नाच रहे थे, झूम रहे थे, ''तू फर्स्ट आ गई रे!''

थोड़ी ही देर में माइक में गायत्री के नाम की घोषणा हुई। पुरस्कार लेने के लिए उसे बुलाया जा रहा था। माइक पर अपना नाम सुनते ही उसे घबराहट होने लगी। वह काँप रही थी। पेट और पिंडलियों की माँसपेशियों में एक अजीब-सा तनाव था। दर्द हो रहा था। वह कह रही थी, अप्पुपन से कि वह जाकर उसका पुरस्कार क्यों नहीं ले लेते हैं।

नारायणन ने उसका बाल पकड़कर खींचा, ''तेरा पुरस्कार मैं क्यों लूँ? चल, जा!''

जहाँ उसका नाम लिखा गया था, वहीं एक छोटा-मोटा मंचनुमा मचान बना था। गायत्री घबराते- घबराते सिर झुकाए पुरस्कार लेने पहुँची। बेचारी ने देखा भी नहीं कि उसे पुरस्कार में आखिर मिला क्या। उसे पुरस्कार का डिब्बा खोलने की भी फुरसत नहीं मिली।

मंच से उतरते ही अप्पुपन ने उसे कसकर बाँहों में भींच लिया, ''चल, घर चलते हैं। सब कितने खुश होंगे!''

तभी किसी ने आकर उनको प्रणाम किया, ''सर, आपने मुझे पहचाना?''

वह व्यक्ति था तैराकी प्रतियोगिता का रैफरी-निर्णायक। उसने कहा, ''मैं हूँ कुमारन नयनार। सन् अस्सी में हाईस्कूल किया था। फुटबॉल टीम का गोलकीपर था।''

''ओह-हो-हाँ-हाँ!'' नारायणन अपना सिर हिलाने लगे। ''कहो कैसे हो? कहाँ हो आजकल?''

''मैं अलेप्पी में हूँ। वहीं विश्वविद्यालय तरणताल का इन्सट्रक्टर हूँ।''

गायत्री चुपचाप बगल में खड़ी थी। अप्पुपन कब घर चलेंगे? आज शाम को आतिशबाजी भी होगी। मैदान में सभी इकट्ठे होंगे।

दोनों में इधर-उधर की बातें हो रही थी कि अचानक उन्होंने नारायणन का हाथ थाम लिया, ''सर, आपसे एक चीज माँगनी है!''

नारायणन चौंक उठे, ''मुझसे? क्या?''

''आपकी पोती!''

(क्रमशः ...)

सी-26/35-40 ए, रामकटोरा
वाराणसी-221001 (उ.प्र.)

From NBT's Treasure Trove

The Mahatma and The Poet

Compiled and edited by Sabyasachi Bhattacharya

Mahatma Gandhi and Gurudev Rabindranath Tagore shared a unique bond and often exchanged letters with each other on various issues. Both of them had built educational institutions based on their ideologies in rural areas that were not sponsored by the British Government.

Mahatma Gandhi was deeply influenced by the Tagore's experiments at *Santiniketan* and later on adopted the method at his *ashrams* in Wardha and Sevagram. Gandhiji also framed the fundamentals for 'Basic Education' in India.

In 1935, due to financial situation, Gurudev Rabindranath Tagore was facing difficulties to run *Santiniketan* and asked Gandhiji for help. On the occasion of Birth Anniversary of Mahatma Gandhi on 2 October, we are producing some of the letters exchanged between the two great personalities taken from the NBT book entitled *The Mahatma and The Poet.*

Rabindranath Tagore's appeal to Mahatma Gandhi about Santiniketan

Santiniketan, (Birbhum)
12th September 1935

My dear Mahatmaji,

I am glad Suren had an opportunity to discuss with you in detail the financial situation of the *asrama* during his recent visit to Wardha. I know how busy you are with your various activities and though I have often thought of telling you of my difficulties I have never done so before. But Charlie insisted that you must be informed about the situation and then only I gave permission to discuss it with you. Over thirty years I have practically given my all to this mission of my life and so long as I was comparatively young and active I faced all my difficulties unaided and through my struggles the institution grew up in its manifold aspects. And now, however,

when I am 75 I feel the burden of my responsibility growing too heavy for me, that owing to some deficiency in me that my appeals fail to find adequate response in the heart of my people though the cause that I have done my utmost to serve is certainly valuable. Constant begging excursions with absurdly meager results added to the strain of my daily anxieties and have brought my physical constitution nearly to an extreme verge of exhaustion. Now I know of none else but yourself whose words may help my countrymen to realize that it is worth their while to maintain this institution in fullness of its functions and to relieve me of perpetual worry at this last period of my waning life and health.

With deepest love,

Rabindranath Tagore

Gandhi undertakes to help Tagore

Wardha,
13 October 1935

Dear Gurudev,

Your touching letter was received only on 11th inst. when I was in the midst of meetings. In the hope of delivering it to me personally Anil needlessly detained it. I hope he is now quite restored to health. Yes, I have the financial position before me now. You may depend upon my straining every nerve to find the required money. I am groping. I am trying to find the way out. It will take sometime before I can report the result of my search to you.

It is unthinkable that you should have to undertake another begging mission at your age. The necessary funds must come to you without your having to stir out of Santiniketan.

I hope you are keeping well. Padmaja who was with you a few days ago, is here for the day and has been telling me how you have aged.

With reverential love,

Yours
M.K. Gandhi

Gandhi arranges required funds

(*Letter in Gandhi's own hand*)

Delhi,
27 March 1936

Dear Gurudev,

God has blessed my poor effort. And here is the money. Now you will relieve the public mind by announcing cancellation of the rest of the programme.

May God keep you for many a year to come.

Yours with love,
M. K. Gandhi

Delhi,
27 March 1936

Respected Sir,

Please find the enclosed draft for Rs.60,000 which we believe is the deficit on the expenses on Shantiniketan to cover for which you have been exhibiting your art from place to place. When we heard this we felt humiliated. We believe that at your advanced age and in your weak state of health you ought not to have to undertake these arduous tours. We must confess that we know very little of the institution except the name. But we have not been unaware of your great fame as the Poet of the age. You are not only the greatest Poet of India, you are the Poet of Humanity. Your poems remind one of the hymns of the ancient *Rishis.* You have by your unrivalled gifts raised the status of our country. And we feel that those whom God has blessed with means should relieve you of the burden of finding the funds required for the conduct of the institution. Our contribution is a humble effort in that direction. For reasons which need not be stated we prefer to remain anonymous. We hope that you will now cancel all the engagements taken for raising the sum above mentioned.

Praying for your long life to continue the service you are rendering to our country.

We remain
Your Humble Countrymen

मुझे तो चालीस करोड़ कुरते चाहिए!

शोभा माथुर ब्रिजेंद्र

गाँधी जी को बच्चे बहुत प्यारे थे और बच्चों को अपने प्यारे बापू। एक बार गाँधी जी ढेर सारे बच्चों के बीच में बैठे थे। वह बच्चों के प्यारे निश्छल मासूम चेहरों में आने वाले भारत की तसवीर देखा करते थे।

ऐसे में एक छोटा-सा प्यारा-सा बच्चा यह देखकर बहुत परेशान हुआ कि गाँधी जी ने अपने शरीर पर बेहद मामूली-सा कपड़ा क्यों पहन रखा है। वह सोचने लगा, 'गाँधी जी का इतना नाम है। ये इतने महान हैं, मगर इनके पास तो एक कुरता भी नहीं है!' काफी देर सोचने के बाद वह अनायास बोल पड़ा, ''बापू, आप कुरता क्यों नहीं पहनते?''

''बेटा, मेरे पास कुरता खरीदने के लिए पैसे ही कहाँ हैं?'' कहकर बापू उस मासूम बच्चे के चेहरे पर आए परेशानी के भावों को पढ़ने लगे।

'बापू के पास कुरता खरीदने को पैसे नहीं हैं। बापू इतने महान हैं। वह हम बच्चों को, देश को इतना प्यार करते हैं। हमें भी तो बापू के लिए कुछ करना चाहिए! मेरी माँ सिलाई करती है। एक दिन में ढेरों कपड़े सी लेती है। मैं माँ से कहूँगा तो वह जरूर एक कुरता बापू के लिए सिल देंगी। हाँ, मैं कल ही बापू के लिए एक कुरता सिलवाकर लाऊँगा।' ऐसा सोचकर वह बच्चा दया से भर गया और दुखी होकर बापू से

बोला, ''बापू, आप परेशान न हों। मेरी माँ भी गरीब है। वह सिलाई करके घर में खाने-पीने का सामान लाती है। दिन भर में ढेरों कपड़े सिल लेती है। मैं माँ से कहूँगा कि मेरे बापू के पास ऊपर पहनने को कुरता नहीं है और सिलवाने को पैसे भी नहीं हैं तो वह जरूर आपके लिए भी एक कुरता सिल देगी बापू!''

बच्चे की मासूम बातों ने गाँधी जी के दिल को छू लिया। वह जान गए कि बच्चे उन्हें कितना ज्यादा चाहते हैं। बच्चे तो बच्चे, देश का हर वासी गाँधी जी को दिल की गहराइयों से चाहता था।

गाँधी जी हँसकर बच्चे से बोले, ''अच्छा, यह बताओ, तुम्हारी माँ कितने कुरते सिल सकती हैं?''

बच्चा बोला, ''बापू, आप जितने कुरते चाहें वह सिल देंगी। एक, दो, तीन जितने आप कहोगे उतने!''

बापू बोले, ''कुरते तो मुझे बहुत चाहिए। मेरा परिवार बहुत बड़ा है। मैं अकेला ही तो नहीं हूँ! तुम्हीं बताओ, क्या यह अच्छा लगेगा कि मैं ही शरीर पर कुरता डालूँ और मेरे बाकी परिवारवाले ऐसे ही रहें?''

लड़का बोला, ''ठीक है बापू, आपके परिवार में जितने लोग हैं मैं सबके लिए माँ से कहकर कुरते सिलवा दूँगा।''

बापू, ''बेटा, मेरा परिवार छोटा नहीं है, काफी बड़ा है, और इस परिवार में चालीस करोड़ मेरे भाई-बहन हैं। जब तक मेरे हर भाई-बहन के पास कुरता नहीं होगा तुम्हीं कहो, मैं कैसे पहन सकता हूँ? क्या तुम्हारी माँ इन सबके लिए कुरते सिल सकती है?''

लड़का बापू के इस उत्तर से चौंक गया और सोचने लगा, 40 करोड़ भाई-बहन बापू के हैं? समझ नहीं आया उस मासूम को। यह सच था कि पूरा देश गाँधी जी का परिवार था और वही इस परिवार के मुखिया थे।

उन्होंने हर उस दुख को अपने ऊपर झेला जो देश का गरीब इनसान झेल रहा था, तभी तो वह 'राष्ट्रपिता' कहलाए!

जब 40 करोड़ जनता परेशान हो, जहाँ अन्न और वस्त्र की कमी हो वहाँ बापू अपने बारे में सोच भी कैसे सकते थे! शायद बालक समझ गया था कुछ-कुछ। उसके बाद वह खामोश हो गया। वह सजल नेत्रों से गाँधी जी को समझने की नाकामयाब कोशिश करता रहा।

509, वी-8, पर्यटन विहार
वसुंधरा एन्क्लेव, दिल्ली-110096

From NBT's Treasure Trove

Diwali

Indira Noopur

Diwali is the festival of enlightenment. In the multicultural set-up of India, it is a people's festival. We wish all our Readers a Happy Diwali!

– Readers' Club Bulletin Team

Diwali, also known as Deepavali, falls sometime between the months of October and November when a pleasant, mild, winter climate has set in. Our hearts rejoice because by this time of year we have had enough of the heat and humidity and the pestilence of myriads of crawling, flying insects.

Diwali is widely celebrated all over India. Many weeks before the festival people get busy: houses are cleaned, walls whitewashed, furniture polished and every nook and corner cleared of cobwebs. New clothes have to be stitched for the children and sweetmeats ordered to be sent to the homes of relatives and friends. Diwali is celebrated in honour of Lakshmi, the goddess of wealth and prosperity, and it is believed that Lakshmi only enters homes that are clean and spotless. Many days before Diwali the mother of Anju, Shobha and Rakesh buys coloured powders to make *rangoli* designs, dry

fruit for sweetmeats, and cloth to stitch new clothes. As in other years, she explains the significance of Diwali and says, "When you grow up whether you celebrate other festivals or not you must promise never to forget Diwali."

Little Anju asks in all her wide-eyed innocence, "Ma, has anyone ever seen Lakshmi? Has she ever visited our home?" Her mother smiles and replies, "*Beti* when we say Lakshmi has entered our home we really mean that happiness and plenty have come to it. It is said that whoever maintains a clean, neat and tidy home is blessed by a visit from Lakshmi. Lazy people who shirk work and don't bother to clean their homes never prosper in life. It is also said that Lakshmi showers her blessing only on those who are kind and cheerful. People who always grumble, backbite and find fault with everything are never successful."

Rakesh said, "This time we must get electric bulbs, like those that the rich moneylender has. How bright and colourful his house looks during Diwali!"

"Many People also light candles," replied his mother. "But if you ask me, I like our old-fashioned oil-lamps made of baked clay best."

"Ma, how many wicks is Grandma going to make?" asked Anju. "She seems to be doing nothing except making cotton wicks!"

"We have such a large house," answered her mother. "She will have to make a lot of wicks because we will need at least five hundred oil-lamps. There mustn't be a dark corner in the house."

"Ma, why does Lakshmi like oil-lamps more than other lights?" asked Anju.

"That's not really so," replied her mother. "In olden days there was no electricity, there were not even wax candles. People only had oil-lamps. Even today many people believe that earthen oil-lamps are the purest and best. And even if they put up electric bulbs outside their homes they will only use oil-lamps for prayer. I like oil-lamps best because their gentle light does not hurt the eyes. And at least once a year the poor potter who makes them can earn some money. But now that oil has become so expensive, few people can afford to light oil-lamps."

So, at long last, dawns the morning of Diwali. On this morning there is no need to shake the children awake or nag them to get out of bed. They have been looking forward to this day. The morning is filled with joyous sounds and the house looks festive: new clothes, colourful

cartons packed with sweets, oil-lamps to be arranged in rows on the walls, all manner of fireworks — rockets, sparklers, fire balloons. Which other festival is celebrated so elaborately?

Shobha is the eldest child of the family. She loves to draw, so her mother puts her in charge of making the *rangoli* designs. Anju and Rakesh do not want to be left out of anything. They sit with Grandma twisting cotton swabs into wicks and help their elder sister with the *rangoli*.

Rakesh and his mother take out hundreds of earthen oil-lamps from a tub and after filling them with oil put wicks in them. Then they are arranged in neat rows along the wall and parapets, in the verandahs and rooms — just about everywhere. As soon as twilight descends, these lamps are lit. And when you go along the road, past houses all aglitter with myriads of lights, what a splendid spectacle it is!

Diwali falls on a moonless night in October or November. Nature made this night the darkest of the year but mankind has made it the brightest.

Lamps are lit and homage paid to Goddess Lakshmi. Earlier, the puja place had been carefully swept and *rangoli* patterns drawn on the floor. Flowers, fruit and sweets are offered to the gods and

children's foreheads are daubed with vermillion powder. Clay images of Lakshmi and Ganesh festooned with lights are later taken out in procession through the streets for worship.

After the prayers, the children are allowed to let off their fireworks. They have been lighting their crackers days

before Diwali. Though their parents cannot stand the loud bangs, the children, particularly Rakesh, love them and bang bangs are heard everywhere. Rockets are fired into the dark skies and they explode into a thousand stars. But there are also many nasty accidents.

Children love distributing the cartons of sweets. Wherever they go to wish people a happy Diwali, they are given sweets. They eat so many that for months after Diwali they cannot bear the sight of them.

There is a legend associated with Diwali. It was celebrated for the first time in Ayodhya when Sri Ramachandra, Lakshmana, Sita and Hanuman returned victorious to Ayodhya after defeating Ravana of Lanka. The people of Ayodhya used *ghee* to light their oil-lamps and made merry for a whole day and night. Since then, people have celebrated Diwali to commemorate Rama's victory over Ravana with the same enthusiasm. By converting the darkest night into the brightest of the year – a symbol is created for the triumph of the light of truth over the darkness of falsehood, the victory of knowledge over ignorance, evil and wickedness, all achieved by man's efforts. This is the true message of Diwali expressed in the sparkling of millions of lights, laughter and gaiety.

Diwali is a Hindu festival, especially of the trading class, for whom it also coincides with the beginning of a new financial year, when they open their new cash registers and books of account. But no longer are festivals the monopoly of any one community. All communities and classes celebrate them. On Diwali a family of foreigners, who lived opposite Anju's house lit oil-lamps. On Eid, she receive vermicelli pudding from their Muslim friends Salma and Hassan. Today Anju will send them sweets in return.

Anju lit a sparkler. Rakesh fired a rocket and a multi-flamed fire-bomb. Some poor children from the neighbourhood stood watching. They could not afford to buy fireworks of their own.

Anju's mother took a packet of sparklers and told her daughter, "Give these to them." Then she brought some sweets from the house. The children's faces lit up.

This is the true spirit of Diwali. There is more joy in bringing happiness and smiles to the faces of people than in letting off crackers and making a lot of noise.

(From the NBT Publication
Festivals of India)

डाक टिकट

ओमप्रकाश बजाज

रंग-बिरंगे डाक टिकट
भाँति-भाँति के
सुंदर डाक टिकट

देश-देश के डाक टिकट
एक से बढ़कर
एक डाक टिकट

पत्रों-पार्सलों पर लगते डाक टिकट
संचार का माध्यम
डाक टिकट

विशिष्ट व्यक्तियों, ऐतिहासिक स्थानों
विशेष अवसरों पर
निकलते डाक टिकट

संग्रह किए जाते डाक टिकट
विदेशी मुद्रा भी
कमाते डाक टिकट

राष्ट्र का प्रतिनिधि कहलाते डाक टिकट
देश की पहचान बताते
डाक टिकट।

(9 अक्टूबर को विश्व डाक दिवस एवं 9 से 15 अक्टूबर तक राष्ट्रीय डाक सप्ताह मनाया जाता है।)

बी-2, गगन विहार, गुप्तेश्वर,
जबलपुर-482001 (म.प्र.)

चाट

अंजली

मीतू को चाट बहुत पसंद थी। वह बड़े चटखारे लेकर टिक्की-गोलगप्पे-पापड़ी खाती। घर के बाहर चाटवाला खड़ा होता था। उसके आने और जाने का टाइम था। ज्यादातर वह सुबह 10 बजे से लेकर शाम को छह बजे तक रहता। मीतू वहीं से चाट खाती। अब तो चाटवाला भी उसे पहचान गया था। मीतू की पसंदीदा चाट थी पापड़ी चाट। वह खूब शौक से खाती।

''जाओ मीतू, बाहर से दूध ले आओ!'' माँ ने कुछ पैसे दिए।

अकसर शाम को दूधवाला नहीं आता था। तब बाजार से दूध लाना पड़ता। पर मीतू को ये अच्छा लगता। वह माँ से पैसे ले जाती और जो बचते उसकी कोई चीज खाती। मीतू नौ साल की थी और उसके कई दोस्त थे। दूध लेकर मीतू लौट रही थी। माँ के दिए हुए पैसों में से कुछ पैसे बच गए थे। जैसे ही उसने चाटवाले को देखा उसका मन हुआ वो भी कुछ चटपटा खाए। मीतू सीधे चाटवाले के पास चली गई।

''भइया, एक प्लेट टिक्की दो!'' मीतू ने कहा।

''अभी लो बेबी जी!'' चाटवाला बोला। उसने एक पत्ता टिक्की बनाकर मीतू को दिया, जिसे वह चटखारे ले-लेकर खाने लगी। जैसे ही

मीतू ने खाना शुरू किया पीछे से आवाज आई, ''ये क्या कर रही हो?'' पीछे माँ खड़ी थी। मीतू डर गई।

'''कितनी बार कहा है चाट मत खाया करो। तुम्हारी तबीयत खराब हो जाएगी, पर तुम सुनती ही नहीं हो। और, तुमसे दूध मँगवाया था वह कहाँ है?'' माँ ने डाँटकर पूछा।

''मेरे पास, ये लो!'' कहकर मीतू ने दूध का पैकेट माँ को दे दिया।

चाटवाला घर के आँगन से दिखता रहा। माँ ने शायद मीतू को चाटवाले के पास देख लिया इसलिए आ गई ''चलो अंदर!'' माँ ने मीतू का हाथ पकड़कर कहा।

मीतू माँ के साथ चली गई।

एक दिन स्कूल की जल्दी छुट्टी हो गई। स्कूल में कोई विजिटर आ रहे थे। मीतू जल्दी घर पहुँच गई। घर पर देखा, माँ नहीं थी। वो पड़ोस वाली आंटी के साथ बाजार गई थी। माँ ने खाना टेबल पर रखा था। मीतू का खाना खाने का मन नहीं था। तभी चाटवाले की आवाज सुनाई दी। मीतू के मन में आया, चाट खाई जाए। वो फटाफट बाहर आई। फिर से उसे अचानक माँ की डाँट याद आई। पर उसने सोचा, 'कोई बात नहीं। आज खा लेती हूँ। माँ को पता भी नहीं चलेगा।'

मीतू दौड़ते हुए चाटवाले के पास पहुँच गई, ''भइया, एक पत्ता पापड़ी बना दो। थोड़ा चटपटा बनाना।''

''अच्छा बेबी जी, अभी लो!'' मीतू ने बड़े मजे से पापड़ी चाट खाई।

''अच्छा, एक प्लेट गोलगप्पा भी दे दो।'' अब तो मीतू चाट-पे-चाट खाए जा रही थी। माँ घर पर नहीं थी। इसलिए कोई डर भी नहीं था।

थोड़ी देर बाद माँ आ गई। तब तक मीतू घर में आकर लेट चुकी थी। रात को अचानक मीतू के पेट में दर्द हुआ। मीतू जोर-जोर से रोने लगी।

माँ ने उठकर पूछा, ''क्या हुआ?''

''पेट में दर्द है!'' मीतू रोते-रोते बोली।

''अरे, ऐसा क्या खा लिया था जो इतना दर्द है!'' मीतू अब डर गई। अगर माँ को बताया तो बहुत डाँट पड़ेगी। पर बताना तो पड़ेगा। दर्द बहुत था। ''माँ, तुम्हारे पीछे से चाट खाई थी।'' मीतू बोली।

''क्या? तुम्हें मना किया था न! तुम सुनती क्यों नहीं हो?'' माँ ने जोर से कहा। मीतू और रोने लगी।

माँ ने किसी तरह पेट पर हींग लगाया और तेल की मालिश की। कुछ आराम था। अगले दिन सबको पिकनिक पर जाना था। सब बच्चे स्कूल से जा रहे थे। माँ ने मीतू को जाने से मना कर दिया। ''कल रात ही तुम्हारी तबीयत इतनी खराब थी। तुम कहीं नहीं जाओगी!'' मीतू का मन बहुत उदास था। उसका पिकनिक पर जाने का बड़ा मन था। चाट खाने की वजह से वह पिकनिक नहीं जा पाएगी। उसने निश्चय किया कि अब वो चाट नहीं खाएगी। अगर खाएगी तो माँ से पूछकर।

टावर-3/601, ऑरेंज काउँटी
इंदिरापुरम, गाजियाबाद (उ.प्र.)

Princess Belmanti

Radha Kant Bharti

There were once four brothers who lived in a village. When their father and mother died, the three elder brothers left for city to earn livelihood, leaving behind their youngest brother with their wives in the village. The three brothers were married at that time, but the youngest was still unmarried. While leaving home, they asked their wives to look after their brother nicely.

The three sister-in-laws started taking care of the younger brother, but each of them kept on insisting him to marry her younger sister. Their insistence became unbearable for him and the poor boy decided to leave the house.

They were offended by his decision and said sarcastically, "Our sisters are obviously not good enough for you, so we will see if you succeed in marrying the great Princess Belmanti."

Belmanti was a legendary figure and was famous for her beauty in the province.

The youngest brother went out in search of Princess Belmanti. As he was walking around, he entered a jungle where he found a hut of a saint. He cleaned the hut and its entrance. When the saint woke up he saw his hut being cleaned up. "Who could have done all this for me," he thought.

He looked around and saw a boy and asked him what he wanted. The boy told him that he wanted to marry Princess Belmanti. The saint said, "Go straight and on the way you will find a *bel* tree (wood apple tree). It will have only one fruit. Pluck the fruit and bring it to me. But don't by any chance, look back." He went there and plucked the fruit and brought it. The saint asked him to take the fruit home and break it.

While going towards his home he felt thirsty, he saw a well nearby. As he reached near the well, the fruit dropped and broke. From that fruit, Princess Belmanti came out, all dressed up with beautiful clothes and precious jewellery.

The boy went to the village to get a *Palki* (palanquin). In the meantime, the princess felt very thirsty. At this very moment, a midwife also came to fetch water from the well.

The princess asked her for water. The midwife gave her the bucket and asked her to fetch water herself. When

the princess was trying to fetch water, the midwife attacked her, took her clothes and jewellery and pushed her into the well. She herself wore the precious jewellery and clothes and waited for the boy. When the boy came back with a *Palki*, the midwife sat on it. The boy thought that she was the princess, and took her to his home.

One day the four brothers were going towards the city to make arrangement for the wedding and stopped at the well to drink water. When the eldest brother put a bucket to fetch water from the well, he saw a beautiful flower. He was not able to retrieve the flower in spite of all his efforts. The other two brothers also tried their best to collect the flower, but were not successful. At last the youngest brother put the bucket into the well and flower jumped into the bucket.

They came home and gave midwife the flower. She recoiled when she saw it and threw it on ashes. But the flowers and leaves grew on the ashes.

The midwife threw the flower again. This time a *bel* tree sprouted overnight from the ashes. The horrified midwife took the tree and gave it to a gardener.

The gardener who took the plant said that he would give half of the fruits to them. Only one fruit grew, however, the

boy requested the gardener to give it to him.

When the boy broke the fruit (*bel*), Princess Belmanti came out of it. The midwife was buried alive and the princess married the boy. Even though it was uttered in sarcasm that the boy should marry Princess Belmanti, it came true after great hardship.

56, Nagin Lake Apartments
Peeragarhi, New Delhi-110087

खेल गीत

माधुरी शास्त्री

मटर पालक गोभी
हम साहब तुम धोबी

सुआ मेथी बथुआ
हम गुड़ तुम सतुआ

टमाटर करौंदा कमरख
बुद्धि ठिकाने रख-रख

आलू कटहल रतालू
मैं बंदर तुम भालू

लौकी बैंगन पीला कद्दू
बनो वीर, मत रहना दब्बू

मूँग मोठ और सेम फली
खिल जाती है दिल की कली

धनिया पुदीना और धुइयाँ
घूमो, देखो, सारी दुनिया

गाजर मूली रुत में खाना
सेहत का भरपूर खजाना

प्रतिदिन खाओ हरी सब्जियाँ
रोगों की उड़ जाए धज्जियाँ

सभी सब्जियाँ न्यारी-न्यारी
पर भिंडी की बात निराली।

मंजु निकुंज
सी/8, पृथ्वीराज रोड
जयपुर (राजस्थान)

My Page

Anecdotal Euphoria

Cadet Lalit Kumar

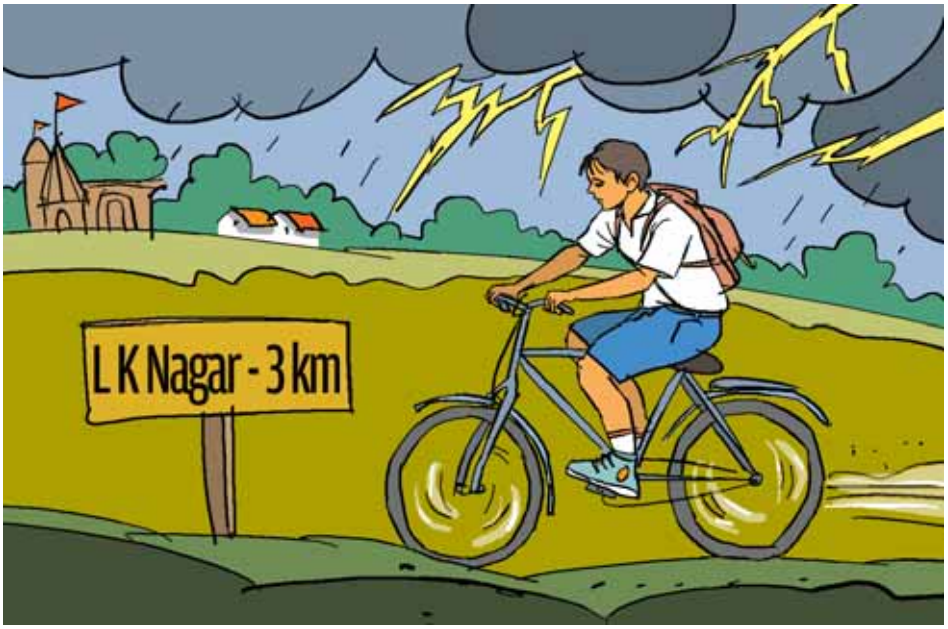

Sometimes things happen to you and you don't even come to know.

"Deluge?"

"Wait a minute, I'll tell you, let me think."

The day was heavy and dull. As I was returning from my school, the weather became tempestuous, followed by an ominous silence. I saw a large metal strip burning in the sky. Before I could even realize that it was a bolt of lightning, I heard a sound, louder than any cracker I had ever burst during Diwali. It was the sound of a thunderclap.

A board alongside the road caught my attention which read, 'L K Nagar – 3km'. I realized that I was required to cycle faster, because at that speed I could not hope to reach home before the approaching storm. I couldn't even find any shelter.

"Better late than never," read another board. "Better to reach home dry than…" my inner voice had not even finished when the chain came out and the pedals got jammed, resulting in my forehead striking against the handle bar. But I was safe.

I came down forthwith and looked for a cycle repair. I had no option but to carry the bicycle. I carried it on one shoulder and school bag on the other.

Suddenly my bicycle flashed – the flash reiterating on my face. As I looked up, I heard a thunderous sound followed by torrential rain. I got in a derelict roadside room, abandoned for years, but all the same, well lit.

"Deluge, Lalit, Lalit."

A faint voice propelled me to think if someone knew my name.

"Humbug," "Oh no…"

The light went off or did someone turn it off?

"Good Night!"

An eerie voice reached my ear.

"What?" I was vexed.

Exasperated by the commotion, I kept the bag in my lap. "Lalit put on your net." Another low but commanding voice was heard.

"What nonsense, are you stupid." I replied in an irksome tone thinking where do I get a net from in this unfamiliar place.

I slept again.

"Lalit, It's 6 o'clock."

"Dad!" My father had come looking for me.

"Come, we shall go home. You can leave your bicycle here. The mechanic will be reaching here shortly and be more circumspect next time," he advised.

I was about to pick up my bag when suddenly a stranger collided with me and my bag fell down.

"My bag." I hollered at the loudest pitch of my voice.

"What bag, which bag are you talking about? You know the time is 6.40 AM and the Officer has already taken the report. You were marked absent. I have been sent for you. Hurry up or else face his wrath," said Ravi Pathak.

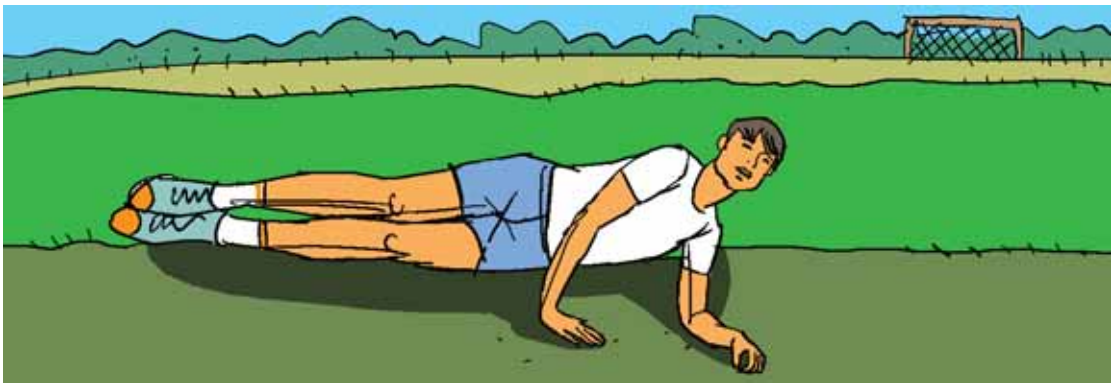

"Great Ravi, couldn't you wake me up once you were leaving for PT?" I questioned.

"Don't point at me, I woke you up but… Hurry up and change." Within a jiffy, I was in the fields where the Officer was ready to welcome me.

"Three extra drills, now get rolling," the Officer thundered in a rapacious voice, true to my premonition. I had just entered the fields and rolling for 200mts would be a mundane task.

"Can't you think of any jovial punishment?" I was about to question him but couldn't. Wry for beginning the day with a wet and green PT shirt, I returned to my dormitory.

"It's fun rolling for 200mts, isn't it?" Pathak's sarcasm burnt me to the core with anger and indignation.

"Pathak, you played a game and hook winked me. I'll never forgive you."

My voice most probably could be heard even in the next dormitory.

"Cool, Lalit, don't lose your patience. Do you recall last night we were practicing for words? I asked 'deluge'… You said you will think, but in the meanwhile you dozed off. After a short while I again asked 'deluge'. Once I didn't get a reply, I put the light off and said 'good night'. When I woke you up at 6, your reply was 'Dad'. You must be dreaming," Ravi elucidated. "It's breakfast time, let's move!" he added.

I had just entered the anterooms after finishing my lunch. Kumar Vikram, the Cadet Captain, came with the orders.

"Lalit, you get six EDs."

"No, its three," I remonstrated as the figure of six was disconcerting.

"Look at the CRO," he asseverated.

CRO 007(a) following cadets are awarded three extra drills for being late for PT. Cadet Lalit Kumar 2625/P topped the list.

CRO 007(b) Cadet Lalit Kumar 2625/P is awarded three extra drills for sleeping without a mosquito net.

"Vikram, when did I do that?"

"Lalit, don't you recollect, the Duty Master came at around 12 o' clock at night and took a round of the entire Section. He ordered you to put on your mosquito net but what you spoke was mumbo jumbo, and slept without a net."

"Hey! It's 3 o'clock, go for ED, else you may get three more."

Vikram stared at his watch.

Now, I laugh as I step out of the anterooms. Really, sometimes, things happen to you and you don't even come to know.

Rashtriya Indian Military College
Garhi Cantt, Dehradun-248003
(Uttarakhand)

राजकुमार और परी

वेद प्रकाश कंवर

एक राजा था। उसकी सुंदर रानी थी। दोनों अपनी प्रजा से बहुत प्रेम करते थे। कुछ दिनों से वे बड़े दुखी रहते थे। एक घोर समस्या उनके राज्य में आन पड़ी थी। एक जादूगर अपने काले जादू की शक्तियों से किसी भी सुंदर लड़की को उसके शादी के मंडप से उठाकर ले जाता और गायब हो जाता। दरअसल, जंगल में उसने एक जादुई सुरक्षित किला बना रखा था और वह उन्हें वहीं ले जाता।

राजा-रानी इससे बहुत दुखी थे। राजा ने एक घोषणा की कि जो कोई उस जादूगर को पकड़ेगा उसे बहुत बड़ा इनाम दिया जाएगा। बहुत-से बहादुर उस जादूगर को पकड़ने मारने गए पर कोई वापस नहीं लौटा।

राजा बड़ा निराश रहने लगा। यह देख एक दिन राजकुमार राजदरबार में उठा और उसने घोषणा की, ''मेरे जीवन का क्या लाभ जिसमें मेरे माता-पिता प्रसन्न न हों और हमारी प्रजा दुखी रहे। जब तक मैं उस शैतान राक्षस जादूगर को नहीं मार गिराता तब तक मैं वापस कतई नहीं लौटूँगा, चाहे मेरी जान ही क्यों न चली जाए!''

यह कहकर वह निकल पड़ा उस जादूगर को पकड़ने। यद्यपि राजा को भय और शक था, फिर भी वह निकल पड़ा। रास्ते में आसमान से उड़कर नीचे... नीचे... उसके पास आती हुई एक परी मिली। उस परी ने राजदरबार में इस राजकुमार की बात सुनी थी। वह उस जादूगर को पकड़ने में उसकी सहायता करना चाहती थी। इसलिए कि वह राजकुमार किसी इनाम के लिए उसे पकड़ने नहीं जा रहा था बल्कि लोगों की भलाई के लिए जा रहा था। युवा कन्याओं की सहायता करने जा रहा था। इस कारण वह उसे सहायता पहुँचाना चाहती थी।

राजकुमार को एक तलवार थमाते हुए और उसकी कलाई पर एक काला धागा बाँधते हुए वह बोली, ''जाओ राजकुमार, अब तुम पर कोई विजय नहीं पा सकता!'' और उसने उँगली के इशारे से राजकुमार को उस जादूगर के किले का रास्ता बता दिया।

राजकुमार ऊबड़-खाबड़ रास्तों पर चलते हुए बड़ी कठिनाई से उस किले के पास पहुँचा। वह उस किले के बाहर एक बड़े मोटे तने वाले गिरे हुए पेड़ के पीछे छुप गया। कुछ समय पश्चात उसने देखा कि वह शैतान जादूगर एक

और युवा कन्या को अपने दाएँ कंधे पर उठाए ला रहा है और वह कन्या रो रही है, चीख और चिल्ला रही है। ज्योंही जादूगर ने अपने जादू से उस किले का विशाल गेट खोल उसके अंदर कदम रखा, राजकुमार भी लपककर किले के अंदर घुस गया। उसने जादूगर को ललकारा। जादूगर उसे वहाँ देखकर हैरान रह गया।

दोनों के बीच युद्ध आरम्भ हुआ। जादूगर ने अपनी सारी जादुई शक्तियों का प्रयोग किया, पर सब बेकार रहा। ज्योंही राजकुमार की तलवार ने परी के बताए अनुसार जादूगर के दाएँ हाथ में बँधे काले धागे को काटा, जादूगर की सारी शक्तियाँ समाप्त हो गईं। राजकुमार ने उसका सिर काट दिया। सिर कटते ही सारा किला जंगल में परिवर्तित हो गया। सभी कन्याओं को आजाद करा राजकुमार उन्हें राज्य में ले आया। राजा, रानी और सारी प्रजा की खुशी का कोई ठिकाना न रहा।

परी के कहे अनुसार राजकुमार ने परी द्वारा अपनी दाईं बाँह पर बँधे काले धागे को और उसकी दी हुई जादुई तलवार को अपने राज्य वापस लौटते समय नदी में फेंक दिया।

फ्लैट नं. 2, पॉकेट-आई, राधिका अपार्टमेंट
सेक्टर-14, द्वारका, नई दिल्ली-110078

छक्कम छक्कम छक्कम रेल

प्रत्यूष गुलेरी

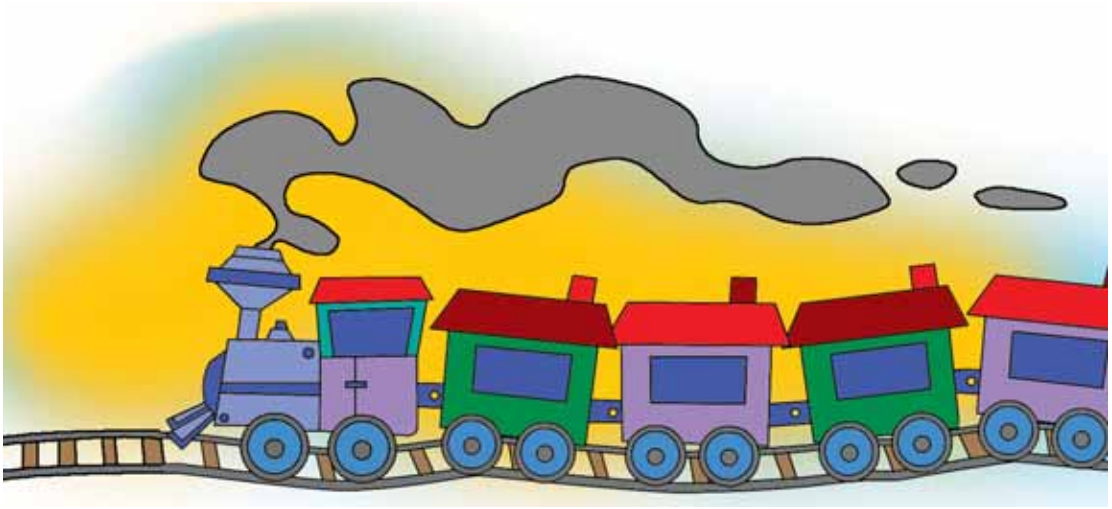

छक्कम छक्कम छक्कम रेल
धक्कम धक्कम धक्कम रेल
इंजन इसको ठेल रहा
बिना टिकट के जावें जेल

नव दुल्हन-सी यह इठलाती
सौ-सौ देखो बल खाती है
पर्वत-घाटी-मैदानों में
लाँघ पुलों पर गर्राती है

इसने सबको अपना माना
ऊँच-नीच का भेद न जाना
सबको सबके घर पहुँचाना
अपना बदले रोज ठिकाना।

सरस्वती नगर, पो. दाड़ी-176057
धर्मशाला (हिमाचल प्रदेश)

Birds, Animals and our Voice

Mohan Lal Mago

Nearly 142 years after Charles Darwin wrote that the sounds uttered by birds offer in several respects the nearest analogy to language, Massachusetts Institute of Technology (MIT) researchers have now found that birdsong closely resembles human speech.

Researchers from MIT, along with a scholar from the University of Tokyo, say that Darwin was right when he wrote in *The Descent of Man* (1871) contemplating how human beings learnt to speak and language could have had its origin from singing.

The evidence, researchers believe, suggests that human language is a grafting of two communication forms found elsewhere in the animal kingdom; first, the elaborate songs of birds, and second, the more utilitarian, information-bearing types of expression seen in a diversity of other animals.

"It is this adventitious combination that triggered human language," co-author and linguistics professor in MIT's Department of Linguistics and Philosophy said. The idea builds upon a conclusion detailed in an earlier work, that there are two layers in all human languages; an 'expression' layer, which involves the changeable organization of

sentences, and a 'lexical' layer, which relates to the core content of a sentence.

The study, authors say that birdsong closely resembles the expression layer of human sentences whereas the communative waggles of bees, or the short, audible messages of primates, are more like the lexical layer. Between 50,000 and 80,000 years ago, humans may have merged these two types of expressions into a uniquely sophisticated form of language.

P-65, Pandav Nagar
Delhi-110 091

तिक्के

शिवचरण चौहान

1

बछड़ा बोला गाय से
दूध नहीं भाता अब तेरा
मुझे प्रेम है चाय से!

2

बंदर गया दुकान में
एल.सी.डी. लाया, अब देखे
क्रिकेट मैच मैदान में।

3

ऊँट गया ससुराल में
कोट, पैंट, टाई लटकाकर
पान दबाकर गाल में।

◆

109/323, रामकृष्ण नगर, कानपुर-208012 (उ.प्र.)

जापान : एक महान देश

इन्दिरा बागची

जापान के इतिहास के पन्ने पलटने से हम पाएँगे कि इस देश के लकड़ियों से बने शहर बार-बार भूकम्प, युद्ध तथा अग्नि के द्वारा सम्पूर्ण रूप से नष्ट होते रहे हैं, परंतु इस देश के निवासी इन दुर्घटनाओं से कभी हताश नहीं हुए। हर बार उन्होंने इन आपदाओं और विपत्तियों का साहसपूर्वक सामना किया और एक नए एवं पहले से भी अच्छे देश का पुनर्निर्माण किया।

जापान में उसके निवासियों को निरंतर प्रकृति के प्रकोप का सामना करना पड़ता है। भूकम्प और उससे उत्पन्न झटके जापानी लोगों के जीवन का अभिन्न अंग बन गए हैं। बाहर से अत्यधिक सुंदर दिखने वाला ज्वालामुखी पर्वत फुजी, जिसमें से हमेशा धुआँ निकलता रहता है तथा सकुराजिमा पर्वत, जो काली राख उगलता रहता है, जापान के लोगों के जीवन का हिस्सा हैं।

1995 में कोबे में हुए भूकम्प के बाद जापानियों ने अपने भवनों को भूकम्प से सुरक्षित बनाने की कोशिश की है। जापान के स्कूलों में बच्चों को आरम्भ से ही भूकम्प से बचने के उपाय बताए तथा उनके अभ्यास कराए जाते हैं।

लोग कहते हैं कि जापान एक ऐसा बड़ा गाँव है जहाँ लोग एक-दूसरे के बारे में सोचते हैं। निरंतर प्रकृति की अप्रत्याशित आपदाओं के कारण जापान के लोगों ने एक ऐसे अनुशासित समाज का संगठन किया है जो उन्हें ऐसी आपदाओं से जूझने की शक्ति देता है।

ऐसा माना जाता है कि जापान की बुलेट रेलगाड़ी के आने के समय से वहाँ के लोग अपनी घड़ी का समय मिलाते हैं। यदि कोई व्यक्ति समय से एक सेकेंड के लिए भी देर से पहुँचेगा तो उसकी ट्रेन छूट जाएगी।

अन्य देशों की तुलना में यह देश यहाँ के निवासियों के लिए सुरक्षित है। यहाँ अपराधों की संख्या कम है और यहाँ की पुलिस इंग्लैंड की पुलिस से भी अधिक सतर्क व कुशल है। स्थानीय पुलिस अपने क्षेत्र के प्रत्येक परिवार को अच्छी तरह से जानती है।

जब कोई भी विदेशी जापान में रहता है तो वह शीघ्र ही हर काम को सुचारु रूप से करना सीख जाता है। इस देश का सिद्धांत है 'जो भी करो ठीक से करो।' चाहे कोई किमोनो पहनकर सड़क पर चल रहा हो, घर के प्रवेश द्वार पर अपने जूते उतारकर एक कतार में सजाकर रखता हो, अपने चौपस्टिक्स (खाना खाने की डंडियाँ) को उसके थैले में गाँठ लगाकर उसी पर उन्हें टिकाकर रखता हो अथवा घर के अंदर के लिए अलग जूते तथा शौचालय जाने के लिए अलग चप्पल का प्रयोग करता हो।

इसी प्रकार, छोटे-छोटे नियमों का पालन करके जापान निवासी अपने जीवन में अनुशासन लाते हैं। इस देश में परिश्रम को महत्व दिया जाता है। उनके लिए कोई भी कार्य छोटा नहीं है। इस देश में सड़क पर झाड़ू लगाने वाला भी

अपने काम पर गर्व का अनुभव करता है और वहाँ की सड़कें साफ रहें इस बात का विशेष ध्यान रखता है।

इस देश में क्रोध का प्रदर्शन करना असभ्यता का चिह्न माना जाता है। बड़ी-से-बड़ी घटना में भी जापान के लोग शांत बने रहते हैं। सड़क पर कोई दुर्घटना होती है, जैसे गाड़ी की टक्कर, तो दोनों ही पक्ष के लोग एक-दूसरे के सामने झुककर नम्रता से क्षमा माँगते हैं, गाली-गलौज या मारपीट नहीं करते। अपने दुर्भाग्य पर जोर-जोर से चिल्लाकर रोना या माथा पीटना इनके स्वभाव का अंश नहीं है। उनके आँसू भी बिना आवाज किए गिरते हैं। एक और गुण जो जापानियों में कूट-कूटकर भरा है वह है इनकी सहनशीलता।

कड़ी-से-कड़ी सर्दी में कई घरों में, घर को गरम रखने का साधन 'कोकात्सु' है जो एक नीची मेज है, जिसके नीचे एक बिजली का हीटर रखा रहता है और ऊपर एक कम्बल। ये लोग इस कम्बल में अपने पैर घुसाकर रखते हैं। उनका मानना है कि यदि आपके पैर और पेट गरम हैं तो बाकी शरीर एकदम ठीक रहेगा।

परंतु पिछले साल जापान के सामने एक गंभीर चुनौती आई भयंकर भूकम्प तथा सुनामी के रूप में। इसने देश को सम्पूर्ण रूप से धराशायी कर दिया। यहाँ तक कि वहाँ के न्युक्लियर पावर स्टेशन को भारी क्षति पहुँची। परंतु अपने साहस तथा दृढ़ संकल्प शक्ति के द्वारा वे इस स्थिति से भी उबर गए हैं। इनलोगों में पुनर्निर्माण की जो योग्यता है वह अनुपम है। यहाँ शिंतो के मंदिरों को हर बीस साल में तोड़कर फिर से नई लकड़ी लगाकर बनाया जाता है।

जापान का इतिहास गवाह है कि वहाँ के लकड़ी से बने शहर युद्ध, आग तथा भूकम्प द्वारा नष्ट होते रहे हैं। 1860 ई. के सिविल वार के पश्चात उत्तरी जापान भूकम्प में नष्ट हो गया था। 1923 में कान्टो के भूकम्प में तोक्यो एक राख के समुद्र में परिवर्तित हो गया था। द्वितीय विश्वयुद्ध में अमेरिका की बमबारी में देश के दो बड़े शहर, हिरोशिमा एवं नागासाकी, नेस्तनाबूद हो गए थे। उसके बाद, 1995 में भयंकर भूकम्प आया।

परंतु जापानियों ने प्रकृति के किसी भी प्रकोप के सामने हार नहीं मानी। उन्होंने हर बार पहले से भी अधिक सुदृढ़ तथा सुंदर जापान का पुनर्निर्माण किया। इसी कारण जापान विश्व का एक शक्तिशाली देश माना जाता है।

जापानियों के हौसले और जज्बे से दुनिया के हर देश सीख ले सकते हैं।

सी-103, पूर्वाशा अपार्टमेंट
मयूर विहार, फेज-1, नई दिल्ली-110091

My Page

Highs and Lows

Cadet Vivek Boora

My life is full of
ups and downs
sometimes world is
there, standing with a crown
sometimes I am so alone
it feels as if everything
has gone
but still my reply to hardships is
never say never

My heart knows
hard times do not last forever
every day is just like a
task for me
when it's complete
I feel so free

Life is just like a rat race
people don't have any time
and they don't know
what they chose
Grandma no longer sings
small children sweet rhyme
running truant from homework
will be a big crime

Human being
the biggest destroyer
of nature

does not care for
any creature
growing selfish
day by day
all creatures
remain for him to slay

Sometimes I sit alone
and think
in this way, our mother earth
will shrink
don't destroy it
for God's sake stop this trend
as she is not a foe, but our friend.

Rashtriya Indian Military College
Garhi Cantonment, Dehradun-248003
(Uttarakhand)

हमारे प्रिय शास्त्री जी

मीनू श्रीवास्तव

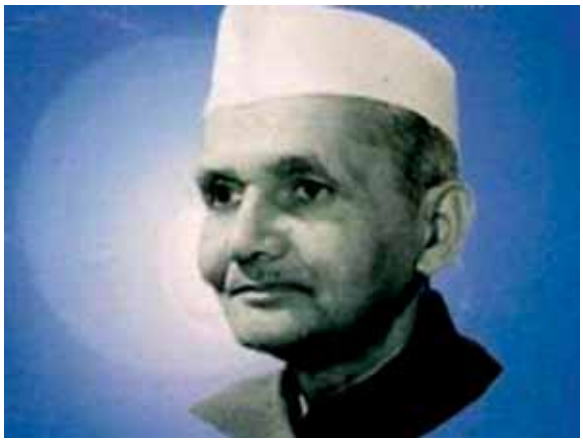

काशी विद्यापीठ का एक छात्र छुट्टियों में अध्यापक के साथ उनके गाँव आया। अध्यापक जिस मकान में रहते थे उसके पास ही एक संगीतप्रेमी वृद्ध संत कबीर का यह भजन गाया करता

झीनी चादर बीनी चादर चदरिया
यह चदरिया सुरनर मुनि ओढ़ि
ओढ़ि के मैली कीन्हीं चदरिया
दास कबीरा जतन से ओढ़ी
ज्यों के त्यों धर दीन्हीं चदरिया।

छात्र गीत की पंक्तियाँ सुनकर भाव-समाधि में खोया हुआ था कि अध्यापक ने उसका ध्यान भंग करते हुए पूछा, ''क्या सोच रहे हो?''

''सोच रहा हूँ कि मैं भी अपनी चदरिया जतन से ओढ़कर ज्यों-के-त्यों धर दूँगागुरु जी।''

अध्यापक ने उसे प्रोत्साहित करते हुए कहा कि खूब जतन से ओढ़ना मेरे बेटे। इस छात्र ने अपना कथन जीवन भर निभाया। यह छात्र उन परिस्थितियों में भी जबकि पैसे के अभाव में उसे तैरकर नदी पार करनी पड़ती थी तब से और जब वे सार्वजनिक जीवन के सर्वोच्च पद (प्रधानमंत्री) पर रहे तब तक एक दिन भी अपने इस आदर्श से विचलित नहीं हुए। इस संकल्पजयी, दृढ़ इस्पात से भी अधिक कठोर और मोम से भी मुलायम व्यक्तित्व के स्वामी का नाम था लाल बहादुर शास्त्री।

लाल बहादुर शास्त्री का जन्म 2 अक्टूबर, 1904 को मुगलसराय (उ.प्र.) के एक साधारण परिवार में हुआ। पिता के देहांत के बाद माँ ललिता देवी उन्हें नाना के घर ले आई और वहीं नाना के स्नेह संरक्षण में हरिश्चंद्र स्कूल में उनका दाखिला हुआ। जिन दिनों वे पढ़ रहे थे उन्हीं दिनों देश में गाँधी जी की आँधी आई और सारे देश में असहयोग की हवा बहने लगी। लाल बहादुर के दिल में भी देशप्रेम की आग उत्पन्न हुई और विद्यार्थी जीवन में ही असहयोग आंदोलन में भाग लेने के कारण जेल यात्रा करनी पड़ी। भोली माँ ने बहुत समझाया कि हमको इस चक्कर में नहीं पड़ना चाहिए, पर वह दृढ़ता से बोले कि माँ, तुम चिंता न करो। जिस प्रकार मुझे देश के प्रति कर्तव्य की चिंता है वैसे ही मैं परिवार के प्रति अपने दायित्वों को भी नहीं भूल सकता। शास्त्री जी ने जो कहा उसे पूरी तरह से निभाया।

इसके बाद वे काशी विद्यापीठ में भर्ती हुए और 'शास्त्री' की परीक्षा अच्छी श्रेणी में पास

की। अनेक व्यक्ति उनके नाम से समझते थे कि वह एक संस्कृत पंडित रहे होंगे पर सच्चाई यह थी कि उस समय काशी विद्यापीठ की यह उपाधि स्नातक डिग्री के समतुल्य समझी जाती थी। इसका नाम बी.ए. न रखकर शास्त्री इसलिए रखा गया था कि लोगों में भारतीयता की भावना को बल मिले।

शास्त्री हो जाने के बाद वे लाला लाजपत राय की सरवेंट ऑफ पीपुल्स सोसायटी में शामिल हो गए। इसमें शामिल होने के बाद सर्वप्रथम मुजफ्फरनगर जिले में हरिजन उद्धार का काम किया। उसके बाद इलाहाबाद आए और किसानों के आंदोलन का हिस्सा बने। इलाहाबाद में ही उन्होंने काँग्रेस में पदार्पण किया और जिला काँग्रेस कमेटी के मंत्री बनाए गए। 1927 में उनका विवाह ललिता देवी के साथ हुआ।

काँग्रेस संगठन में शास्त्री जी को जो भी कार्य दिया जाता था उसे वे पूरे मनोयोग से करते। फलतः बड़े-बड़े नेता उन पर विश्वास करने लगे। सन् 1937 से 1940 के बीच का समय उनके लिए हर तरह से देशसेवा के काम में ही बीता। सच्चे लोकसेवी की भूमिका वे बखूबी निभाते रहे। आजादी के पूर्व गठित मंत्रिमंडल में वे उत्तर प्रदेश के गृहमंत्री बने, संसदीय सचिव बने। उनकी गणना लौह व्यक्तित्व वाले महापुरुष में की जाती थी। स्वतंत्रताप्राप्ति के बाद जब संयुक्त प्रांत का गठन हुआ तो उन्हें पुलिस और यातायात मंत्री बनाया गया। अगले चुनाव में वे केंद्रीय मंत्रिमंडल में रेल विभाग के मंत्री बनाए गए। इस विभाग में अपने कार्यकाल के बीच एक सामान्य रेल दुर्घटना के लिए स्वयं को दोषी अनुभव कर नैतिक दृष्टि से इस्तीफा दे दिया।

नेहरू जी के बाद लाल बहादुर शास्त्री देश के प्रधानमंत्री बने। पाकिस्तान के साथ उन्होंने मित्रतापूर्ण संबंध बनाने चाहे, पर पाकिस्तान ने यह सोचकर भारत पर आक्रमण कर दिया कि नेहरू जी के बाद भारत की स्थिति कमजोर हो गई है। लेकिन उनके नेतृत्व में भारतीय सेनाओं ने डटकर मुकाबला किया और पाकिस्तान को बुरी तरह से हारना पड़ा।

प्रधानमंत्री पद पर पहुँचकर भी शास्त्री जी ने अपनी साधक स्तर की सादगी नहीं छोड़ी। भारतीयता के वे इतने अनन्य भक्त थे कि जब कभी भी वे विदेश जाते वहाँ भी सदैव भारतीय भोजन ही करते थे।

पाकिस्तान को युद्ध में कड़ी मात मिलने के बाद उसने रूस की मध्यस्थता पर वार्तालाप करना स्वीकार कर लिया। यह वार्ता जनवरी 1965 में ताशकंद में हुई। शास्त्री जी और पाकिस्तान के तत्कालीन राष्ट्रपति अयूब खाँ ने कोसिजिन की मध्यस्थता में युद्ध रोकने और जमीन लौटा देने तथा बाद में शांतिपूर्ण संबंध बनाने का समझौता किया।

11 जनवरी को यह वार्ता संपन्न हुई और संयोग से उसी रात उनका स्वास्थ्य इतने इंभीर रूप से खराब हुआ कि कुछ ही घंटों में उनके प्राण पखेरू उड़ गए। उनकी मृत देह पर ऐसी शांति थी कि मानो वे कह रहे हों कि मैंने अपनी चदरिया ज्यों-के-त्यों धर दीन्ही है।

ई-18/133, सेक्टर-3, रोहिणी
दिल्ली-110085

खुद करके देखो

वीरबहूटी या थ्री-व्हीलर कार

आइवर यूशिएल

बनाना शुरू करो

गेंद का एक-तिहाई हिस्सा काटकर अलग कर दो। अब बेलनाकार कॉर्क का सिर्फ इतना बड़ा टुकड़ा लो जो गेंद के अंदर जाकर आसानी से घूम सके। इस कॉर्क में केंद्र के पास आर-पार दो सूराख कर दो और इसमें से इलास्टिक बैण्ड इस प्रकार गुजारो ताकि सारी व्यवस्था चित्र के अनुसार हो जाए। बस, इसके बाद गेंद को खूबसूरती के साथ रंगकर इसे आकर्षक वीरबहूटी का रूप दे डालो।

तमाशा देखने के लिए वीरबहूटी को हाथ में लेकर कॉर्क को दक्षिणावर्त्त (clockwise) दिशा में घुमाओ। इससे क्या होगा जानते हो? इलास्टिक बैण्ड में बट पड़ जाएँगे और जब तुम वीरबहूटी को सीधा करके जमीन पर छोड़ोगे तो ये बट स्वयं खुलने के प्रयास में कॉर्क को भी घुमाएँगे, जिससे जमीन से रगड़ खाता हुआ कॉर्क वीरबहूटी

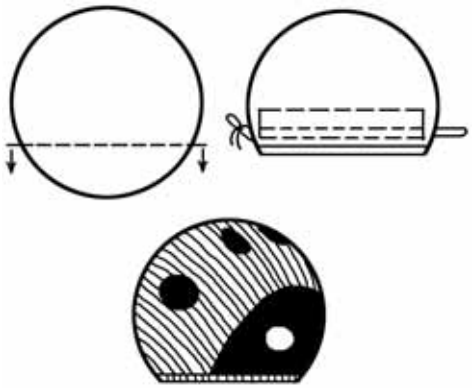

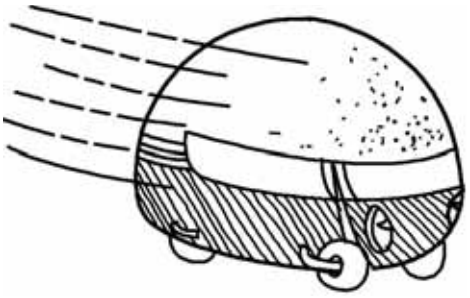

को आगे बढ़ा देगा। देखने पर यह बड़ा आश्चर्यजनक लगेगा कि वीरबहूटी आखिर चल कैसे रही है।

ये चीजें जमा करो

पिंग-पांग की गेंद, एक कॉर्क, बड़ा हेयर पिन, पिलास, इलास्टिक बैण्ड, प्लास्टिक के तीन मोती, रंग व ब्रुश।

इसी तरह, थ्री-व्हीलर कार भी बनाई जा सकती है। सब कुछ वैसे ही करना है, अंतर सिर्फ इतना ही है कि हेयर पिन को आधा काटकर इससे कार के अगले पहिये की धुरी बना लो। दोनों पहियों की जगह काम में आएँगे दो मोती। पीछे की धुरी को गेंद में एक ओर से घुसाओ। इसमें मोती पहनाओ और इसे दूसरी ओर से बाहर निकालकर इन बाहर निकले दोनों सिरों को थोड़ा-सा मोड़ दो।

गेंद को इस तरह खूबसूरती के साथ कार की शक्ल में रंग दो कि देखने वाला बस, देखता ही रह जाए।

विचित्र लोक में शीना

यह पुस्तक बच्चों के लिए भरपूर मनोरंजन का पिटारा है। इसमें चार लघु बाल उपन्यास और चार कहानियाँ संकलित हैं। 'शीना विचित्र लोक में' बच्चों को रेशम-कीट की अलबेली दुनिया में घुमाता है। 'जंगल की सैर' में नन्ही चीनी का अकेलापन दूर करने के लिए उसका दोस्त शैंकी चूहा उसे जंगल की रोमांचक सैर कराता है। 'बस्ता' में एक गरीब बच्चे रामू की कहानी मन को छू लेती है। 'फूलों का गीत' पर्यावरण की सुरक्षा सिखाता है। इसके साथ ही चार मजेदार कहानियाँ भी, जो बच्चों को बेहद रुचेंगी।

शीना विचित्र लोक में
कामना सिंह
साहित्यिका इंडियन पब्लिकेशंस
रु. 300.00

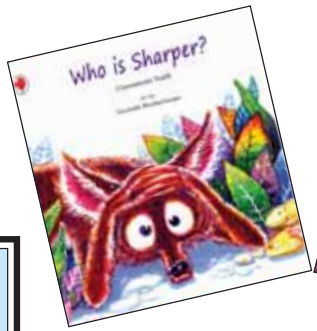

Who is Sharper?
Gunamani Nath
Rs 35.00

Forever Friends
Ankeet Bhattacharjee
Rs 35.00

Here are two amazing National Book Trust, India publications for children beautifully illustrated by Durlabh Bhattacharjee. The first book *Who is Sharper* bears in it an animal tale that dwells on the importance of wit and how it can become a tool to survive in a world deplete of morality.

And, in the second book *Forever Friends* the frogs and the fish are born in the same pond and look similar. The frogs think they are smarter as they can live in water as well as on land. But dangers loom large…an interesting tale about the bonding that came to be between the frog and the fish. The story has been translated into English by Deep Saikia. A must collection for libraries, schools and children.

R.N.I. No. -64771/96 Postal Regd. No-DL-SW-1-4066/2012-14
Licenced to post without prepayment, L. No. U (SW) 24/2012-14 Mailing Date :. 20/21 Same Month
Date of Publication:14/10/2013

Let's find out the right plug to light up Diwali bulbs!!